بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 03.02.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम के फ़ज़्लों, स्तरों एवं प्रतिष्ठाओं तथा महानता का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 03 फ़रवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुर्आन करीम के फ़यूज़ (कृपाएँ एवं उपकार) बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि इसके फ़यूज़ और बरकतां का दर सदैव जारी है तथा वे हर ज़माने में उसी तरह स्पष्ट एवं उज्जवल हैं जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में थे।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि यह सच है कि अधिकांश मुसलमानों ने क़ुर्आन शरीफ़ को छोड़ दिया है लेकिन फिर भी क़ुर्आन शरीफ़ का नूर एवं बरकतें तथा इसके प्रभाव सदैव जीवित एवं सदैव ताज़े हैं। अतः मैंने इस समय इस प्रमाण के लिए भेजा गया हूँ और अल्लाह तआला सदैव अपने अपने समय पर अपने बन्दों को अपनी सहायता एवं समर्थन के लिए भेजता रहा है, क्यूँकि उसने वादा फ़रमाया था कि إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ निःसन्देह हमने इस ज़िक्र अर्थात क़ुर्आन करीम को नाज़िल किया है तथा हम ही इसके रक्षक हैं।

अतः इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को क़ुर्आन करीम के प्रकाशन और सुरक्षा के लिए भेजा है। आप अलै. को वे विवेक पूर्ण ज्ञान सिखाए हैं जो लोगों से गुप्त थे। आप अलै. क़ुर्आन करीम के शासन को दुनिया में स्थापित करने के लिए आए हैं किन्तु दुर्भाग्यवश तथाकथित विद्वानों ने आप अलै. के दावे के विरोध को आरम्भ से ही अपना चलन बनाया हुआ है तथा कोई बुद्धि संगत बात सुनना भी नहीं चाहते तथा जनता को भी पथभ्रष्ट कर रहे हैं। पाकिस्तान में समय समय पर इन तथाकथित विद्वानों में उबाल उठता रहता है तथा उनके साथ तुच्छ प्रसिद्धि में रूचि रखने वाले राजनेता तथा कार्यकर्ता भी मिल जाते हैं और अहमदियों को विभिन्न बहानों से विरोध का निशाना बनाया जाता है। गत कुछ अवधि से क़ुर्आन करीम के शब्दों में फेर बदल एवं

उसके अपमान के मनघड़त मुक़दमे अहमदियों पर बनाने के प्रयास में लगे हुए हैं, अल्लाह तआला इनके शर से बचाए और जो अहमदी इस अनुचित एवं कष्टदायक आरोप में उन्होंने पकड़े हुए हैं, उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के द्वारा ही क़ुर्आन करीम के विवेक पूर्ण ज्ञान का पता मिलता है और यह अहमदिया जमाअत ही है जो इस काम का दुनिया में परा रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अपने कथनों तथा अपनी रचनाओं में क़ुर्आन करीम के स्तर एवं प्रतिष्ठा का जो इरफ़ान (ब्रह्मज्ञान) पेश फ़रमाया है, आज मैं वह बयान करूँगा।

आप अलै. क़ुर्आन करीम की पूर्ण एवं सम्पूर्ण शिक्षा के सम्बंध में एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि मेरा मज़हब यही है कि क़ुर्आन अपनी शिक्षा में सम्पूर्ण है तथा कोई सत्यता इसके बाहर नहीं ..... परन्तु साथ इसके यह भी मेरी आस्था है कि क़ुर्आन शरीफ़ से समस्त दीन के मसलों को निकाला एवं ग्रहण किया जा सकता है तथा इसके संक्षेप (वर्णन) की सटीक व्याख्या पर अल्लाह की इच्छानुसार समर्थ होना हर एक विशलेषण कर्ता एवं मौलवी का काम नहीं बल्कि यह विशेष रूप से उनका काम है जो अल्लाह की वह्यी से नबुव्वत अथवा महान विलायत के द्वारा सहायता दिए गए हैं।

इस संदर्भ में कि मार्ग दर्शन का सर्वप्रथम माध्यम क़ुर्आन है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मेरा धम यह है कि तीन चीज़ें हैं जो तुम्हारी हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने तुम्हें दी हैं। सबसे पहले क़ुर्आन है जिसमें ख़ुदा की तौहीद, महानता एवं गौरव का वर्णन है तथा जिसमें उन मतभेदों का निर्णय किया गया है जो यहूदियों तथा नसरानियों में थे ..... क़ुर्आन करीम में मना किया गया है कि तुम ख़ुदा के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो ..... सो तुम सावधान रहो और ख़ुदा की शिक्षा तथा क़ुर्आन की हिदायत के विपरीत एक क़दम भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि जो व्यक्ति क़ुर्आन करीम के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है, वह मुक्ति का द्वार अपने हाथ से अपने ऊपर बन्द करता है ..... मुझे ख़ुदा ने सम्बोधित करके फ़रमाया है (इलहाम में) إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ अर्थात समस्त प्रकार की भलाईयाँ क़ुर्आन में हैं, यही बात सच है।

फ़रमाया कि ख़ुदा ने तुम पर बड़ा उपकार किया जो क़ुर्आन जैसी किताब तुम्हें प्रदान की ..... अतः इस उनुकम्पा का आदर करो तुम्हें दी गई यह प्यारी अनुकम्पा है, बड़ो सम्पदा है। यदि क़ुर्आन न आता तो पूरी दुनिया एक गन्दे मुदग़े (ख़ून का जमा हुआ लोथड़ा) की भांति थी। क़ुर्आन वह किताब है जिसके मुक़ाबले पर समस्त हिदायतें तुच्छ हैं।

क़ुर्आन करीम के ख़ातमुल-कुतुब होने के विषय में आप अलै. फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और क़ुर्आन शरीफ़ ख़ातमुल-कुतुब है, अब कोई और कलमा या कोई और नमाज़ नहीं हो सकती। जो कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अथवा करके दिखाया, उसे छोड़ कर मुक्ति नहीं मिल सकती। जो इसको छोड़ेगा वह नर्क में जावेगा, यह हमारा धर्म और आस्था है। परन्तु इसके साथ यह भी याद रखना चाहिए कि इस उम्मत के लिए

अल्लाह के सम्बोधनों एवं बातचीत का द्वार खुला है तथा यह द्वार जस क़ुर्आन करीम की सच्चाई और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर हर पल ताज़ा साक्ष्य है।

फ़रमाया- इस्लाम के उद्देश्यों में से तो यह बात थी कि इंसान केवल ज़बान से ही वहदहू ला शरीक न कहे बल्कि वास्तव में समझ ले तथा स्वर्ग एवं नर्क पर काल्पनिक ईमान न हो बल्कि वास्तव में इसी जीवन में वह स्वर्गीय अनुभवों का आभास कर ले तथा उन पापों से जिनमें भक्षी मानव लिप्त हैं, मुक्ति पा ले। यह महान उद्देश्य इस्लाम का था और है, और यह ऐसा पवित्र शुद्ध उद्देश्य है कि कोई अन्य कौम इसका उदाहरण अपने धर्म में पेश नहीं कर सकती।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आज हज़रत मसीह मौऊद अलै. के मानने वालों को यह स्तर प्राप्त करने की आवश्यकता है, दुनिया को बताने की आवश्यकता है, हम पर कुफ्र के फ़तवे लगाने वालों को दिखाने की आवश्यकता है कि अहमदी केवल पुरानी कहानियाँ ही बयान नहीं करते बल्कि आज भी जीवित किताब और जीवित रसूल के मानने वालों पर अल्लाह तआला की कृपाओं के उतरने पर विश्वास रखते हैं, इस बात पर विश्वास रखते हैं कि ख़ुदा तआला आज भी बोलता है।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि हमें अल्लाह तआला ने वह नबी दिया जो ख़ातमुल मोमिनीन, ख़ातमुल आरिफ़ीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन है तथा इसी प्रकार वह किताब उस पर अवतरित की जो जामउल कुतुब तथा ख़ातमुल कुतुब है।

क़ुर्आन करीम पर ईमान कितना अनिवार्य है इस संदर्भ में आप अलै. फ़रमाते हैं- मैं क़ुर्आन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से तनिक इधर उधर होना बेईमानी समझता हूँ। मेरा अक़ीदा यही है कि जो इसको तनिक भी छोड़ेगा वह नर्क में है।

क़ुर्आन करीम और प्रकृति के विधान में परस्पर सम्बंध को बयान करते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं- पवित्र एवं परिपूर्ण शिक्षा क़ुर्आन करीम की है जो मानवीय वृक्ष की हर एक शाखा का पोषण करती है। क़ुर्आन शरीफ़ केवल एक पहलू पर ज़ोर नहीं डालता बल्कि कभी तो क्षमा एवं अनदेखा करने की शिक्षा देता है किन्तु इस शर्त के साथ कि क्षमा करना भलाई की दृष्टि से हिकारी हो तथा कभी उचित परिस्थितियों एवं उपयुक्त समय के दोषी को दंड देने के लिए फ़रमाता है। अतः वास्तव में क़ुर्आन करीम ख़ुदा तआला क उस प्रकृतिक विधान का चित्र है जो सदैव हमारी नज़र के सामने है। यह बात अत्यंत बुद्धिमत है कि ख़ुदा का कथन एवं क्रिया दोनों एक दूसरे के पूरक होने चाहिएँ अर्थात जिस रंग एवं रीति पर दुनिया में ख़ुदा का कर्म दिखाई देता है, अवश्यक है कि ख़ुदा तआला की सच्ची किताब अपनी क्रिया के अनुसार निर्देश दे।

फ़रमाया- सच्चा धर्म वही है जो इस ज़माने में भी ख़ुदा का सुनना एवं बोलना दोनों साबित करे अर्थात सच्चे धर्म में ख़ुदा तआला अपने सम्बोधन एवं कलाम से अपने अस्तित्व की आप सूचना देता है। ईश्वर का बाध एक अत्यंत कठिन कार्य है, सांसारिक वेदों एवं दर्शन शास्त्रियों का काम नहीं जो ख़ुदा का पता लगावें। क्यूँकि धरती और आकाश को देख कर केवल यह साबित होता है कि इस संयुक्त व्यवस्था एवं प्रदर्शन का कोई रचीयता होना चाहिए। किन्तु यह तो साबित नहीं होता कि वास्तव में वह

रचीयता मौजूद भी है तथा 'होना चाहिए' और 'है' में जो अन्तर है, वह स्पष्ट है। अतएव उस अस्तित्व का मुख्यतः पता देने वाला केवल क़ुर्आन करीम है।

आप अलै. फ़रमाते हैं कि हर एक क़ौम तथा हर एक धर्म के मुख्याओं को हमने आमंत्रित किया है कि वे हमारे मुक़ाबले में आकर अपनी सच्चाई का निशान दिखाएँ, परन्तु एक भी ऐसा नहीं कि जो अपने धर्म की सच्चाई का कोई नमूना उदाहरण के रूप म दिखाए। हम ख़ुदा तआला के कलाम को सम्पूर्ण चमत्कार मानते हैं तथा हमारा विश्वास एवं दावा है कि कोई दूसरी किताब इसके समान नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की शिक्षाओं का तौरात एवं इंजील के मुक़ाबले पर सम्पूर्ण एवं तर्कपूर्ण होना साबित करने के बाद फ़रमाया कि साहस एवं प्रमाणों के साथ समस्त धर्मों पर क़ुर्आन की प्रमुखता साबित करना, आप अलै. का उस समय दावा था जब इस देश में अंग्रेज़ों का शासन था, चर्च का वर्चस्व था फिर भी आप अलै. ने क़ुर्आन करीम की प्रभुता का खुला चैलेंज दिया तथा किसी भय को भी निकट न आने दिया क्यूँकि आप अलै. अल्लाह तआला के वे दूत थे जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में भेजा। यही चीज़ हम आप अलै. की शिक्षा एवं लिट्रेचर में देखते हैं तथा यही वह शिक्षा है जिसे अहमदिया जमाअत आगे फैला रही है। अहमदिया जमाअत पर आरोप लगाने वाले यह कहते हैं कि अहमदी क़ुर्आन करीम में बदलाव एवं अपमान कर रहे हैं।

क़ुर्आन करीम के महत्त्व एवं आवश्यकता के विषय में आप अलै. फ़रमाते हैं- क़ुर्आन शरीफ़ के सम्मुख पूरे विश्व का सुधार है तथा यह किसी विशेष जाति को सम्बोधित नहीं करता बल्कि खुले खुले रूप में बयान फ़रमाता है कि पूरी मानव जाति के लिए अवतरित हुआ है तथा हर एक की भलाई इसका उददेश्य है।

ख़ुत्बः के अंत में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम के उपकारों, स्तरों, रुतबः एवं प्रमुखता के सम्बंध में और भी कई हवाले हैं जो आइन्दा बयान होंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ

-

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131